झारखण्ड की हिंदी कहानी और आदिवासी जीवन : एक विश्लेषण

राँची विश्वविद्यालय, राँची के हिंदी विभाग में

पीएच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रारूप

शोध निर्देशक

डॉ. प्रज्ञा गुप्ता
सहायक प्राध्यापिका
राँची विमेंस कॉलेज राँची
हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

निक्की डिसूज़ा
एम. ए., नेट - 2024

झारखण्ड की हिंदी कहानी और आदिवासी जीवन : एक विश्लेषण

शोध विषय का परिचय :-

भारत विविधता से भरा एक देश है, जहां अलग-अलग क्षेत्रों की सांस्कृतिक विरासत, परंपराएं और लोककथाएं उनकी पहचान का अभिन्न हिस्सा है। झारखंड 15 नवम्बर 2001 को बिहार से अलग होकर एक अलग राज्य बना, यह राज्य अपनी समृद्ध आदिवासी संस्कृति और परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। इस राज्य की लगभग 28% आबादी आदिवासी समुदायों की है, जिनमें संथाल, मुंडा, उरांव, हो, खड़िया, असुर, पहाड़िया, बिरहोर और कोरवा प्रमुख है। इन आदिवासी समुदायों की जीवनशैली, उनके संघर्ष, मान्यताएं, रीति-रिवाज और प्रकृति से जुड़ाव उनकी कहानियों में सजीव रूप से चित्रित होते है। यहां के मूल निवासी अपनी जीविका के लिए प्रकृति पर ही आश्रित रहते है, जो इनकी कहानियों के माध्यम से चित्रित होता है।

झारखण्ड की हिंदी कहानियां जुड़ी हुई है आदिवासी जीवन का जो लगाव उनके जंगलों, पहाड़ों और नदियों से उनके संबंधन को प्रतिबिंबित करती है। इनके लोकगीत, लोकनृत्य और त्यौहार दर्शाते है प्रकृति के प्रति उनके प्रेम को जो इनके जीवन का अभिन्न हिस्सा है। परंतु आधुनिक समय में बढ़ते औद्योगीकरण के कारण जंगलों की कटाई, पूंजीपतियों द्वारा जमीनों पर कब्जा और विकास के नाम पर आदिवासियों का विस्थापन उनकी जीवन को मुश्किल कर रहा है। झारखंड के लेखकों ने अपनी हिंदी कहानियों के माध्यम से आदिवासियों की समस्याओं को भी उजागर करती है।

झारखंड की हिंदी कहानियां मुख्यत: मौखिक परम्पराओं के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानांतरित होती रही है। इन कहानियों में आदिवासी अपने देवताओं और अपने समाज की आस्थाएं, जीवन-मूल्य, प्रकृति के प्रति श्रद्धा और सामाजिक संघर्षों का भावपूर्ण चित्रण मिलता है। लोककथाएं, मिथक और कविदंतियां उनके सामाजिक इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

झारखंड की माटी में आदिवासी जीवन की सोंधी सुगंध रची बसी है, जो झारखण्ड के हिंदी कहानियों के रचनाओं में नजर आता है। आदिवासी समाज जो आज अपने अस्तित्व के बचाव के लिए संघर्ष कर रहे है, और काफी समय से अपने अस्तित्व के लिए पूंजीपतियों से संघर्ष कर रहे, जो कही न कही यहां के कहानीकारों के माध्यम से इनकी हिंदी कहानियों में प्रतिबिंबित होता है। इनकी कहानियों में एक ओर जहां प्रकृति के प्रति आदिवासियों का गहरा लगाव दर्शाया गया है, वहीं दूसरी ओर पूंजीपतियों द्वारा आदिवासियों का शोषण और विस्थापन की पीड़ा को व्यक्त किया गया है। लेकिन झारखण्ड की हिंदी कहानियाँ सिर्फ आदिवासी समाज के दुख और संघर्ष तक ही सीमित नहीं हैं। इन कहानियों में बताया गया कि कैसे नई पीढ़ी शिक्षा और जागरूकता के जरिए अपने अधिकारों के लिए आगे बढ़ रही है। आदिवासी समाज अपनी परंपराओं को भी संभाल रहे है और नए दौर की चुनौतियों से भी लड़ रहे हैं। इनकी हिंदी कहानियों में आदिवासी समाज में बदलाव, महिलाओं की भागीदारी और आर्थिक स्वतंत्रता जैसे विषयों को भी दर्शाया गया है। झारखण्ड की हिंदी कहानियाँ सिर्फ साहित्य का हिस्सा मात्र नहीं हैं, बल्कि समाज को जागरूक करने का भी एक माध्यम है।

समकालीन कहानियों में आदिवासी समाज का नया स्वरूप उभरता है, जहां उनकी सांस्कृतिक पहचान और अस्तित्व की रक्षा के लिए आवाज उठाई जाती है। झारखंडी साहित्य में आदिवासी जीवन के विविध पहलुओं को प्रमाणिक रूप से चित्रित किया गया है, जिनमें भूमि अधिकार, विस्थापन, जल-जंगल-जमीन के प्रति संघर्ष, गरीबी, अशिक्षा, सामाजिक असमानता और सांस्कृतिक अस्मिता जैसे विषय प्रमुख है। इस शोध के माध्यम से आदिवासी जीवन के जटिल पक्षों का विश्लेषण करना है। अंततः यह कहा जा सकता है की झारखण्ड की हिंदी कहानियों के माध्यम से आदिवासी समाज को आवाज देने का प्रयास किया हैं और उनके अधिकारों, संघर्षों तथा उनकी उम्मीदों को सामने लाने का कार्य करती हैं।

शोधकार्य का उद्देश्य :-

भारत में कई राज्य है और सभी राज्यों की अपनी अलग-अलग सभ्यता और अपनी अलग-अलग संस्कृति है, भारत देश का ही एक राज्य है झारखण्ड जो इस शोध का केंद्र बिंदु स्थान है। इस शोध का उद्देश्य झारखण्ड के रचनाकारों द्वारा आदिवासी कहानियों और उनके जीवन का संपूर्ण विश्लेषण करना इस शोध का प्राथमिक उद्देश्य रहेगा। साथ ही झारखण्ड की लोककथाओं और आधुनिक कहानियों का तुलनात्मक विश्लेषण करना भी इस शोध का उद्देश्य है।

- ❖ झारखंड के आदिवासी समाज की संस्कृति, जीवनशैली और परंपराओं का अध्ययन करना इस शोध का उद्देश्य रहेगा। आदिवासी समाज प्रकृति का पूजन करते है, जहां

उनके पर्व, त्यौहार, रीति-रिवाज, देवी-देवता, लोक विश्वास और मिथक उनके सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

- ❖ झारखंड की परंपराओं लोककथाओं और आधुनिक हिंदी साहित्यिक कहानियों के माध्यम से आदिवासी जीवन का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

- ❖ झारखंड के कहानियों के माध्यम से आदिवासी समाज पर हो रहे शोषण, उत्पीड़न और उनके अधिकारों की लड़ाई का जीवंत दस्तावजे प्रस्तुत करने का प्रयास है। उनकी पहचान के संघर्ष का साहित्यक विश्लेषण करना रहेगा।

- ❖ झारखंड की कहानियां प्रयास है झारखण्ड की महिलाओं का स्थिति को दर्शाने का जिन्हें सिर्फ शोषण की वस्तु के रूप में देखा गया है। आधुनकि झारखंडी साहित्य में आदिवासी समाज के यथार्थ को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

यह शोधकार्य प्रयास है झारखण्ड के आदिवासी समाज के कहानियों में आदिवासी की स्थिति को यथार्थ स्वरूप प्रदान कर, उनके जीवन के यथार्थवादी चित्रण को रेखांकित करना है।

<u>शोध की प्रासंगिकता :-</u>

भारत के विभिन्न राज्य है, जहां भारत के कई राज्य बहुत विकसित हो रहे है, किंतु कई बहुत पिछड़े है जिनमें एक झारखण्ड भी है। अन्य राज्यों की तुलना में

अभी भी झारखण्ड की पहचान यहां की आदिवासी समाज, इनकी संस्कृति से है। आदिवासी समाज की अपनी विशिष्ट संस्कृति, भाषा, परंपरा और जीवनशैली के लिए जानी जाती है। झारखंड के आदिवासी समाज आज भी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे है, आज के बढ़ते औद्योगिकीकरण ने इनके संस्कृति को विलुप्ति की ओर बढ़ा रही है। ऐसे में झारखण्ड की कहानियां आदिवासी समाज की संस्कृति की अस्मिता को संरक्षित करने का कार्य करती है।

शोध की सीमा :-

प्रस्तुत शोध कार्य में झारखण्ड में आदिवासी जीवन पर आधारित कहानियों का साहित्यक और सांस्कृतिक अध्ययन है।

- यह शोध कार्य विशेष रूप से झारखंड राज्य तक सीमित है। इसमें झारखण्ड के आदिवासी समाज पर अध्ययन किया जाएगा। इस शोध में झारखंड से बाहर के आदिवासी समाज (जैसे छत्तीसगढ़, ओडिशा, मध्य प्रदेश या पूर्वोत्तर राज्यों के आदिवासी समुदाय) को शामिल नहीं किया गया है। इसका शोध का केंद्र केवल झारखंड के आदिवासी जीवन पर केंद्रित रहेगा।
- इस शोध में केवल झारखंड के कथाकारों द्वारा लिखित कहानियां का अध्ययन किया जाएगा, जिससे की अन्य साहित्यिक विद्याएं (जैसे नाटक, उपन्यास, कविता, आत्मकथा) इससे वंचित रह जायेगे।
- इस शोध का कालखंड आधुनिक झारखंडी हिंदी साहित्य पर केंद्रित रहेगा।

इस शोध में कहानियों में व्यक्त किए गए राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक पहलुओं का विश्लेषण सूक्ष्मता से किया जाएगा।

शोध प्रविधि :-

इस शोध कार्य में झारखण्ड की हिंदी कहानियों में आदिवासी जीवन का साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन किया जाएगा। इसके लिए गुणवत्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया जाएगा। इसमें प्राथमिक स्त्रोत के रूप में झारखंडी कहानियां और द्वितीयक स्त्रोत के रूप में शोध ग्रन्थ, पत्र-पत्रिकाएं और समीक्षाएं प्रयुक्त होंगी।

झारखंड की हिंदी कहानी और आदिवासी जीवन अध्याय विभाजन :-

प्रथम अध्याय :

क. आदिवासी की परिभाषा

ख. आदिवासी जीवन का स्वरूप

द्वितीय अध्याय :

हिंदी कहानी और झारखंड

क. झारखंड की हिंदी कहानी - एक परिचय

ख. झारखंड के हिंदी कहानीकार - सामान्य परिचय

तृतीय अध्याय :

क. राष्ट्रीय फलक पर झारखंड की हिंदी कहानियों का महत्व

ख. भूमंडलीकरण का प्रभाव एवं झारखंड के आदिवासी

चतुर्थ अध्याय :

झारखण्ड की हिंदी कहानियों में आदिवासी जीवन

क. झारखंड की हिंदी कहानी में चित्रित आदिवासी जीवन एवं समाज

ख. झारखंड के हिंदी कहानियों में चित्रित आदिवासी जीवन की समस्याएं

पंचम अध्याय :

झारखण्ड की हिंदी कहानी : भाषा एवं शिल्प

क. हिंदी कहानी की भाषा

ख. हिंदी कहानी का शिल्प

उपसंहार:-

झारखंड की हिंदी कहानियां आदिवासी समाज की स्थिति को दर्शाती है, यह कहानियां आदिवासी समाज के संघर्ष और सांस्कृतिक को समझने का माध्यम है।

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. सिंह पुष्पाल, भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.2015
2. रणेंद्र, झारखंड इंसाक्लोपीडिया, खंड- 4, वाणी प्रकाशन, सं.2017
3. तलवार वीर भारत, झारखंड के आदिवासियों के बीच एक एक्टीविस्ट के नोट्स, भारतीय ज्ञानपीठ, सं.2008
4. मिश्र रामदरश, हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा, राजकमल प्रकाशन, सं.2010
5. मधुरेश, हिंदी उपन्यास का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं.2011
6. वर्मा रतन, श्रवणकुमार गोस्वामी और उनके उपन्यास, रचनाकार प्रकाशन दिल्ली, सं. 2012
7. मुंडा जिंदर सिंह, भाषायी अस्मिता और आलोचना, दिशा इ. प., दिल्ली, सं.2019
8. शर्मा सुभाष, संस्कृति और समाज, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण 2013
9. अग्रवाल पुरषोत्तम, संस्कृति: वर्चस्व और प्रतिरोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2008
10. दवे रमेश, आलोचना - समय ओर साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण 2005
11. सिंह राकेश कुमार, ऑपरेशन महिषासुर, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2019
12. सिंह राकेश कुमार, ठहरिए……! आगे जंगल है, प्रेलक प्रकाशन, मुंबई, सं.2020
13. रणेंद्र, गूंगी रुलाई का कोरस, राजकमल प्रकाशन, सं. 2021

14. *कुमार वसंत, लहरों के तीर, अरुणोदय प्रकाशन, रांची, संस्करण 1985*

15. *गोस्वामी श्रवण कुमार, एक टुकड़ा सच, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1992*

16. *गोस्वामी श्रवण कुमार, मेरे मरने के बाद, राजपाल एण्ड सन्ज, संस्करण 1994*

17. *गोस्वामी श्रवण कुमार, सोमा, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1997*

18. *'अन्नपूर्णा' पूर्णिमा केडिया, यात्रा प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2007*

19. *मांझी महुआ, मैं बोरिशाइल्ला, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण 2007*

20. *केरकेट्टा रोज, पगहा जोरी जोरी रे घाटो, देशज प्रकाशन बिहार झारखंड, संस्करण 2009*

21. *जेवियर कुजूर, आदिवासी कहानी: परंपरा और आधुनिकता, संकरण 2007*

नोट: उपशीर्षक में फेर बदल संभव है।